मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 10

nbt.india

अक्तूबर 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

घुमक्कड़ नारायण बाल-साहित्य यात्रा महोत्सव में एनबीटी की भागीदारी 2
पटना में मुख्यमंत्री द्वारा पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्‌घाटन 3
न्यास की पुस्तक को सम्मान 3
बाल साहित्य : ऑस्ट्रेलिया में लेखन एवं प्रकाशन 4
स्कूली बच्चों के लिए कथावाचन सत्र 4
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन 5
श्रीनगर पुस्तक मेला 5
पुस्तक परिचय 6
एनबीटी में स्वच्छ भारत कार्यक्रम 7
'दिल्ली पुस्तक मेला' में एनबीटी स्टॉल को प्रथम पुरस्कार 7
उत्तर प्रदेश स्थित रा.पु. न्यास के एजेंट/वितरक : नाम-पते 8
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले 8

नवीनतम प्रकाशन

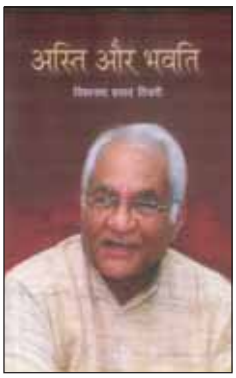

अस्ति और भवति
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 434 ` 355
ISBN 978-81-237-7216-5

पूर्वोत्तर की लोक-परंपराओं पर आधारित कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के मुख्यालय, वसंत कुंज, नई दिल्ली में 17 सितंबर, 2014 को 'पूर्वोत्तर की लोक-परंपराओं पर आधारित ग्राफीय उपन्यास तैयार करना' विषय पर एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में रा.पु. न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस अवसर पर न्यास के कुछ अधिकारीगण भी उपस्थित थे। अपने स्वागत-उद्‌बोधन में उन्होंने कार्यशाला के लिए न्यास को मिले सहयोग की सराहना की। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि न्यास द्वारा ग्राफीय उपन्यासों को तैयार करने संबंधी जो पहल की गई है वह एक मुश्किल और चुनौती भरा कार्य होगा, तो भी न्यास ने इस चुनौती को स्वीकार किया है।

डॉ. सिकंदर ने कहा कि इस परियोजना के अंतर्गत लगभग 10 उपन्यास तैयार करने की कोशिश की जाएगी जिनमें से कम-से-कम आधे उपन्यास 2015 के आगामी पुस्तक मेले से पहले लाने की हमारी कोशिश रहेगी।

कार्यशाला का उद्‌घाटन प्रख्यात लेखक और न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने किया। अपने उद्‌घाटन-संबोधन में उन्होंने कहा, ''उत्तर-पूर्व लोक कथाओं का 'भंडारघर' है और हम उत्तर-पूर्व के लोगों से प्रभावपूर्ण ढंग से संवाद करना चाहते हैं। हमारी इच्छा है कि उत्तर-पूर्व पर आधारित ग्राफीय उपन्यासों को हम दुनिया के सामने लाएँ।'' उन्होंने आगे कहा, ''एनबीटी द्वारा आयोजित यह कार्यशाला एक पथप्रदर्शक कदम है और इसके द्वारा हम हमारी क्षमताओं की पुनर्खोज कर रहे हैं। यह सीखने और पुनः सीखने की एक प्रक्रिया है। हम उत्तर-पूर्व की कथावाचन के 'स्पिरिट' को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं।'' उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, ''गत वर्ष हमने सिओल पुस्तक मेला के अवसर पर, अतिथि देश के रूप में भाग लेते हुए, 'श्री रत्ना एंड किम सुरो' शीर्षक से एक ग्राफीय उपन्यास का प्रदर्शन किया था जिसे कोरिया के पाठकों द्वारा पर्याप्त सराहना मिली। यह स्पष्ट संदेश है कि ग्राफीय उपन्यास पुस्तक-प्रेमियों के बीच स्वीकार्य हो रहे हैं।''

श्री सेतुमाधवन ने कहा कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, हर क्षेत्र में लोककथाएँ बिखरी हुई हैं और यह कदम निश्चय ही हमारे प्राचीन समय की कथाओं को पुनः सामने लाएगा। ग्राफीय उपन्यास पाठकों के साथ संवाद का एक नया उपकरण बनेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से कोई ठोस परिणाम सामने आना चाहिए।

तदंतर, न्यास के अँग्रेजी संपादक श्री कुमार विक्रम ने कार्यशाला के संबंध में एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। इसके माध्यम से परियोजना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद, एक ग्राफीय उपन्यास कैसे बनता है

इस पर प्रख्यात डिजाइनर एवं फिल्म निर्माता श्री सौमित्र दासगुप्ता द्वारा सारगर्भित प्रस्तुति हुई।

तीन सत्रों में संपन्न इस आयोजन के प्रथम सत्र का शीर्षक था–प्रथम अवलोकन। सत्र के संचालनकर्ता प्रो. संजय हजारिका ने उत्तर-पूर्व के राज्यों एवं शेष राज्यों के बीच के अंतराल को जोड़ने के एनबीटी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने उत्तर-पूर्वी राज्यों को 'बहुभाषी' एवं 'बहुसांस्कृतिक' निरूपित करते हुए उनकी जटिलताओं को भी रेखांकित किया और कहा कि इसी कारण उत्तर-पूर्व के चित्रण में हमें अतिरिक्त सावधानी की जरूरत है। यहाँ की अधिकांश लोककथाएँ चूँकि अनूदित हैं, इसलिए अनुवाद में मूल तत्व यथावत रहे इस पर ध्यान देना चाहिए। प्रो. डेसमंड खरमावफ्लांग ने उत्तर-पूर्व के निम्नवर्गीय लोगों द्वारा झेले जा रहे अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि उत्तर-पूर्व और इसकी संस्कृति को प्रस्तुत करते समय कहानियों को वहाँ की पारिस्थितिकी से जोड़ा जाना चाहिए, इससे कहानी की पठनीयता बढ़ जाती है।

प्रो. मीनाक्षी सेन बंद्योपाध्याय ने कहा कि लोक परंपरा में दो प्रकार का साहित्य होता है–मौखिक एवं लिखित। उन्होंने राय दी कि एनबीटी प्रकाशित लोक साहित्य को ग्राफीय उपन्यासों में लाए, क्योंकि केवल लोकप्रिय चरित्रों पर ध्यान देने से मूल खो सकता है। उन्होंने इस काम में सहयोग देने की मंशा जताई। उन्होंने कहा, "भाषा, छवि एवं विचार ग्राफीय उपन्यासों के सृजन के केंद्रबिंदु हैं।" प्रो. एस. प्रनाम सिंह ने जोर देकर कहा कि "चाक्षुष कला और लिपि किसी भी ग्राफीय उपन्यास के अखंड हिस्सा होते हैं और दोनों में सुसंगत संवाद की आवश्यकता है।" प्रो. जॉय पोचुआउ ने कहा कि उत्तर-पूर्व के चित्रण में बड़ी सावधानी की जरूरत है। उन्होंने कहा कि लेखक लिखते समय अपने लक्षित पाठक को नजर के सामने रखें। उत्तर-पूर्व के चित्रण के क्रम में तथ्यात्मक विचारणा को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

दूसरा सत्र 'चुनिंदा लोककथा पर वाचन एवं विमर्श' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता, डॉ. वियोपाव ने की। जिन प्रतिभागियों ने अपनी कहानियों का वाचन किया वे थे–डॉ. वियोपाव, सुश्री यीशे डोमा, श्री पी. वुन्ना नाओन्गम, श्री अजुल वी. तामसंग, गनगोम महेशकांता, सुश्री मरमिट लेप्चा तथा सुश्री इंद्रिम बू।

कहानी वाचन के बाद प्रतिभागियों के बीच व्यापक विमर्श हुआ। अध्यक्ष डॉ. वियोपाव ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि सांस्कृतिक तत्वों के साथ मिथक एवं कहानियों का सृजन प्रतिभागियों द्वारा साझा की गईं कहानियों के महत्वपूर्ण विषय रहे। उन्होंने आगे कहा कि पशु और मनुष्य की दुनिया के बीच मैत्री भाव अधिकांश कहानियों के तत्व रहे।

तीसरे सत्र का संचालन श्री शुद्धसत्व बसु ने किया। विषय था–'पढ़ी गई एवं विमर्शित कहानियों के प्रति कलाकार का दृष्टिकोण–ग्राफीय उपन्यासों को तैयार करने के संदर्भ में'। इस सत्र में कुछ चित्रकारों ने पढ़ी गई कहानियों के चरित्रों पर आधारित स्केच बनाए। चित्रकारों का यह सामान्य दृष्टिकोण रहा कि जिस भी किसी कहानी पर चित्र बनाने हों उससे संबंधित परंपरा एवं संस्कृति के संबंध में चित्रकार को गहरी जानकारी होनी चाहिए। एक चित्रकार किसी लेखक या पाठक की तरह कहानी के प्रति अपना दृष्टिकोण रख सकता है और उसे उसी के अनुरूप चित्रांकन करना चाहिए। कलाकारों का यह सोचना था कि ग्राफीय उपन्यास दृश्योन्मुखी होते हैं और जब वे किसी पृष्ठ पर विभिन्न चरित्रों को उकेर रहे होते हैं तो उन्हें चित्रों के बीच क्रमबद्धता बनाए रखनी होती है।

सत्र समापन से पूर्व लेखकों एवं चित्रकारों की एक कार्यकारी टीम को अंतिम रूप

दिया गया। प्रतिभागी इस बात पर भी सहमत हुए कि विषय-विशेषज्ञ भी होने चाहिए जो कार्यकारी समूह को अपने विचार दे सकें। इसलिए टीम में लेखक, चित्रकार, संपादक एवं विषय-विशेषज्ञ होने चाहिए, जहाँ भी उनकी आवश्यकता हो।

एनबीटी के इस नए उपक्रम, ग्राफीय उपन्यासों की तैयारी, के एक प्रोन्नयक रणनीति के रूप में, चरित्र-आधारित एक कैलेंडर छापे जाने के सुझाव दिये गए। पुस्तक के आकार, उसके द्विरंगी या चतुरंगी होने आदि के संबंध में भी विचार हुआ। जिन उपन्यासों पर काम शुरू किये गए हैं उन्हें नवंबर 2014 तक तैयार कर लिये जाने पर सहमति हुई। तैयार डमी को उत्तर-पूर्व क्षेत्र के किसी केंद्र में एक कार्यशाला में विचार-विमर्श हेतु रखा जाएगा।

समापन वक्तव्य न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने दिया। परियोजना में शामिल लेखकों-चित्रकारों को सम्मानजनक मानदेय दिए जाने की बात उन्होंने कही।

इससे पूर्व, उद्घाटन सत्र का संचालन श्री कुमार विक्रम ने किया। संपादकीय सहायक सुश्री कैरोलिन पाओ ने समन्वयक के साथ शेष तीन सत्रों का संचालन किया। धन्यवाद ज्ञापन समन्वयक, संपादकीय सहायक श्रीमती वसुंधरा लाल ने किया।

घुमक्कड़ नारायण बाल-साहित्य यात्रा महोत्सव में एनबीटी की भागीदारी

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, निवेश (स्वयंसेवी संगठन) व हिमालयन हब फॉर आर्ट, कल्चर एंड हेरीटेज (एचएचएसीएच) के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने 9 अगस्त, 2014 को शिलांग में आयोजित 'घुमक्कड़ नारायण बाल साहित्य यात्रा महोत्सव' में भागीदारी की।

महोत्सव का उद्घाटन मेघालय सरकार के शिक्षा सचिव, श्री प्रेडरिक रॉय खारकोंगर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, "मुझे बच्चों के इस महोत्सव का उद्घाटन करते हुए प्रसन्नता हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि इससे विद्यार्थियों के बीच पठन एवं लेखन कार्यों में रुचि बढ़ेगी।" उन्होंने कहा कि आगामी वर्षों में भी बच्चों के लिए इस तरह की गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।

स्वयंसेवी संगठन, निवेश की अध्यक्षा, सुश्री रचना बिष्ट ने कहा, "यह महोत्सव यूनेस्को के तत्वावधान में उन लोगों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए प्रारंभ हुआ है जिनके पास पढ़ने की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। हम राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आभारी हैं जिसने महोत्सव की शुरुआत से अपना सहयोग दिया। हम आशा करते हैं कि एनबीटी के साथ इस सहयोग को हम निरंतर बनाए रखेंगे।"

महोत्सव के दौरान एनबीटी द्वारा एक कथावाचन सत्र एवं चित्रण पर आधारित कार्यशाला प्रायोजित की गई। कथावाचन सत्र, बच्चों की प्रख्यात लेखिका, सुश्री बीना कपूर द्वारा समन्वित किया गया व कार्यशाला का संचालन प्रसिद्ध चित्रकार, सुश्री विकी आर्या ने किया।

इस सत्र में विभिन्न विद्यालयों से आए लगभग 150 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने उत्साहपूर्वक कथावाचन सत्र एवं चित्रण कार्यशाला में भाग लिया। बच्चों द्वारा लिखी हुई कहानियाँ एवं चित्रों को देखकर बालमन की सृजनात्मकता व कल्पना को स्पष्टतः देखा जा सकता था।

पटना में मुख्यमंत्री द्वारा पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन

''मस्तिष्क को पैना करने के लिए पुस्तक पढ़ना बेहद जरूरी है। राष्ट्रीयता, सौहार्द बढ़ाने वाली पुस्तकें पढ़िए। गुणग्राही बनिए। हंस की तरह पानी-दूध के कटोरे से दूध छानकर पीने की कला सीखें।'' ये उद्गार बिहार के मुख्यमंत्री माननीय श्री जीतन राम माँझी ने व्यक्त किए। वे पटना में शिक्षक दिवस, 5 सितंबर के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा नवनिर्मित पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र के उद्घाटन-अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, ''अपनी पुरानी विरासत को मत भूलिए। समाज में जो उच्छृंखलता आई है उसका यही कारण है।'' उन्होंने संस्कृति की उन चीजों को सहेजने का आह्वान किया जो विलुप्त होती जा रही हैं। श्री माँझी ने शिक्षक दिवस के अवसर पर पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र के उद्घाटन पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने पुस्तक प्रोन्नयन के क्षेत्र में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कार्यों की सराहना की।

विदित हो कि देश-भर में पुस्तक संस्कृति का परिवेश बनाने और पुस्तक प्रोन्नयन हेतु रा.पु. न्यास अनेक राज्यों की राजधानी में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की स्थापना कर रहा है। इसी क्रम में पटना में भी ऐसे पाँचवें केंद्र की स्थापना की गई है। इस केंद्र द्वारा न्यास की पुस्तकों की बिक्री भी की जाएगी। लेकिन इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य उस राज्य विशेष में पुस्तक प्रोन्नयन है।

इस अवसर पर पटना पधारीं राज्यसभा सांसद सुश्री कहकशाँ परवीन ने अपने लालित्यपूर्ण उद्बोधन में कहा, ''किताब से अच्छी कोई दोस्त नहीं होती। यह लोगों की जिंदगी रौशन करती है।'' उन्होंने शिक्षक दिवस पर ऐसे आयोजन के लिए न्यास को साधुवाद दिया। उन्होंने शिक्षकों का महत्व रेखांकित करते हुए कहा, ''शिक्षक अँधेरे से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वे बच्चों को तालीम देकर उन्हें रौशन करते हैं।''

बिहार विधान परिषद के सदस्य प्रो. रामवचन राय ने अपने विद्वतापूर्ण लंबे संबोधन में अनेक बातें कहीं। उन्होंने कहा, ''बिहार ज्ञान की धरती है। इसका बेहद समृद्ध अतीत रहा है। बिहार के लोग भरपूर किताबें पढ़ते हैं।'' उन्होंने नेशनल बुक ट्रस्ट के हिंदी नामकरण के लिए न्यास-निदेशक की सराहना की। उन्होंने नवनिर्मित नालंदा विश्वविद्यालय में हाल ही में अध्यापन कार्य की शुरुआत होने का संदर्भ इस पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र से जोड़ते हुए कहा, ''बिहार में पुस्तक एवं पठन संस्कृति का पुनरोदय हो रहा है।'' उन्होंने प्रोन्नयन केंद्र की स्थापना को 'स्वागत योग्य कदम' कहा। प्रो. राय ने बिहार में हर वर्ष पुस्तक मेला लगाने के लिए न्यास से आग्रह किया।

न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने अपने संबोधन में कहा, ''आने वाले दिनों में बिहार में पुस्तक संस्कृति और बढ़ेगी और बिहार सरकार से हमें इस कार्य में मदद मिलेगी।'' निदेशक महोदय ने देश के दूसरे राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उद्धृत करते हुए कहा, ''किताबें हमारे मन का मैल हटाने के लिए दवा का काम करती हैं।'' डॉ. सिकंदर ने बिहार से ही अपना करिअर शुरू होने की जानकारी देते हुए कहा कि मूल रूप से तमिल होने के बावजूद उन्हें हिंदी आती है। उन्होंने पटना में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की स्थापना का उद्देश्य बताते हुए कहा, ''पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्देश्य पुस्तक नहीं पढ़ने वालों को मुख्य धारा में लाना है। पुस्तक प्रोन्नयन हमारी प्रतिबद्धता है।'' उन्होंने राज्य के हर जिले, कसबे में पुस्तक प्रदर्शनी लगाने की इच्छा जताते हुए कहा कि गाँव-कसबों से हमने पुस्तकों को जोड़ने का काम किया है और आगे भी करेंगे। नवोद्घाटित पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र को उन्होंने हर प्रकार की पुस्तकीय गतिविधियों का केंद्र बताया। उन्होंने कहा, ''इस केंद्र से स्थानीय लेखक, अनुवादक, चित्रकार और पुस्तक क्षेत्र से जुड़े सब लोगों को फायदा होगा।'' उन्होंने कहा कि ''हमारा सचल पुस्तक वाहन गाँव-गाँव जाएगा।'' निदेशक महोदय ने न्यास की पुस्तकीय गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। निदेशक महोदय ने राज्य की मैथिली एवं भोजपुरी भाषाओं के प्रोन्नयन की भी बात कही। उन्होंने कहा, ''न्यास मैथिली एवं भोजपुरी भाषाओं में भी पुस्तकें प्रकाशित करता है। हम इन भाषाओं के प्रोन्नयन के लिए प्रतिबद्ध हैं। आज इस कार्यक्रम के तुरंत बाद हम नवगठित मैथिली सलाहकार समिति की बैठक इसी केंद्र में करने जा रहे हैं।'' डॉ. सिकंदर ने पुस्तकों की महत्ता रेखांकित करते हुए कहा, ''इंटरनेट आज सिर्फ इनफॉर्मेशन दे रहा है, ज्ञान नहीं। ज्ञान तो किताबों से ही मिलेगा।''

इससे पूर्व, कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यमंत्री महोदय द्वारा परंपरागत रूप से दीप प्रज्वलन से हुई। तदुपरांत, स्थानीय डीएवी स्कूल की छात्राओं ने स्वागत-गान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर न्यास से पिछले दिनों प्रकाशित कुछ पुस्तकों का लोकार्पण मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी के कर-कमलों से हुआ। ये पुस्तकें थीं—*उषाकिरण खान : संकलित कहानियाँ, वो तीस दिन* (मोनिका गुप्ता), *नटखट कुप्पू के अजब-अनोखे कारनामे* (प्रकाश मनु), *कवि का कहा* (संपा. : मिथलेश श्रीवास्तव), *संतोख सिंह धीर की चुनिंदा कहानियाँ,* (संपा. : बलदेव सिंह बद्दन), *पपेट्स इन इंडिया एंड एब्रोड* (शांपा घोष, उत्पल के. बनर्जी) तथा *एक्टीविटी बेस्ड लर्निंग साईंस* (एम.एच. गुफरान)।

न्यास की पुस्तक को सम्मान

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 'लोकोपयोगी सामाजिक विज्ञान' पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तक *ग्राम नियोजन* के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का इंदिरा गाँधी राजभाषा सम्मान पुस्तक के लेखक श्री महिपाल को दिया गया। यह सम्मान राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने दिया। इस अवसर पर गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी भी उपस्थित थे। श्री महिपाल ग्रामीण विकास मंत्रालय में निदेशक हैं।

बाल साहित्य : ऑस्ट्रेलिया में लेखन एवं प्रकाशन

24 सितंबर, 2014 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा न्यास-सभागार में 'बाल साहित्य : ऑस्ट्रेलिया में लेखन एवं प्रकाशन' विषय पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध लेखक व बाल पुस्तकों के लेखकों एवं चित्रकारों की सोसायटी के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के सह-अध्यक्ष, श्री क्रिस्टोफर चेंग मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री क्रिस्टोफर चेंग द्वारा लिखित पुस्तक 'वाटर' के हिंदी व तमिल अनुवाद का लोकार्पण भी हुआ। इससे पूर्व श्री चेंग; विख्यात लेखिका, डॉ. मधु पंत व न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर द्वारा क्रमशः पुस्तक का अँग्रेजी, हिंदी व तमिल भाषा में पाठ किया गया।

इस सत्र में, श्री चेंग ने ऑस्ट्रेलिया में बाल-पुस्तकों के प्रकाशन-परिदृश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऑस्ट्रेलिया में सचित्र पुस्तकें, ग्राफीय उपन्यास तथा डिजिटल पुस्तकें अत्यंत लोकप्रिय हैं अतः बड़े एवं छोटे प्रकाशक विभिन्न शैलियों में देशज पुस्तकों की एक शृंखला तैयार कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि लिंग विशेष पुस्तकें अर्थात विशेषतया लड़के व लड़कियों के लिए लिखी पुस्तकें भी पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। 'इमस अंडर द वेड' तथा 'वन मिनट साइलेंस' जैसी पुस्तकों से उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के प्रकाशक देशज पुस्तकों का विकास कर रहे हैं, जो केवल ऑस्ट्रेलिया पर ही चर्चा करती हैं। इसका कारण यह है कि ऐसी पुस्तकें न केवल पाठकों में लोकप्रिय हैं, वरन ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न पहलुओं के संबंध में जानकारी भी प्रदान करती हैं। उन्होंने अभिभावकों को सुझाव दिया कि वे अपने बच्चों के लिए कथावाचन करें तथा अपना अनुभव साझा करें। उन्होंने अपनी पुस्तक 'वाटर' के हिंदी तथा तमिल अनुवाद के लिए एनबीटी को धन्यवाद दिया।

न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने वहाँ उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत में श्री क्रिस्टोफर चेंग का आगमन दोनों देशों के मध्य साहित्यिक विनिमय को प्रोत्साहित करेगा।

इस अवसर पर अनेक प्रसिद्ध लेखक, चित्रकार तथा शिक्षाविद् भी सभागार में उपस्थित थे जिनमें श्री जगदीश जोशी, सुश्री बीना कपूर, सुश्री रेखा देशमुख, सुश्री कुमुद कपूर आदि शामिल थे। कार्यक्रम में शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों तथा बच्चों ने भाग लिया तथा वक्ता के साथ बातचीत की।

कार्यक्रम का समन्वय, न्यास के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र द्वारा किया गया।

स्कूली बच्चों के लिए कथावाचन सत्र

8 सितंबर, 2014 को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा न्यास-परिसर में बच्चों के लिए एक परस्पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में प्रख्यात लेखक तथा एनबीटी द्वारा प्रकाशित 'हिरोशिमा का दर्द' नामक पुस्तक के अनुवादक, डॉ. तोमोको किकुची ने बच्चों के साथ बातचीत की।

डॉ. तोमोको किकुची ने इस अवसर पर विश्व इतिहास में हुई सबसे भयानक घटना अर्थात 6 अगस्त, 1945 को जापान में हुए परमाणु विस्फोट को श्रव्य-दृश्य माध्यम की

सहायता से समझाने का प्रयास किया। डॉ. किकुची ने यहाँ उपस्थित सभी बच्चों को वह स्थान दिखाया जहाँ विस्फोट हुआ था। उन्होंने बताया कि अब वह स्थान एक स्मारक बना दिया गया है। डॉ. किकुची ने बच्चों को यह भी बताया कि प्रत्येक वर्ष 6 अगस्त को लोग हिरोशिमा में एकत्रित होते हैं व उन सभी को श्रद्धांजलि देते हैं, जिन्होंने इस विस्फोट में अपनी जान गँवा दी थी। 'हिरोशिमा का दर्द' कहानी में एक सात वर्षीय लड़की मिशेन के माध्यम से परमाणु विस्फोट द्वारा उपन्न हुई विकिरणों के हानिकारक प्रभावों से अवगत करवाया गया है। उन्होंने बताया कि मानव जाति को सुरक्षित रखने के लिए इस तरह की घटनाओं को दोबारा नहीं होने देना चाहिए।

इससे पूर्व, न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के महत्व के बारे में बताया तथा यह भी बताया कि किस प्रकार पुस्तकें हमारे जीवन को आनंदमय बना देती हैं। उन्होंने कहा कि पुस्तकें इस तथ्य को उजागर करती हैं कि प्रत्येक मनुष्य को 'जियो एवं जीने दो' के सिद्धांत का पालन करना चाहिए।

इस सत्र में 120 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने लेखक से बातचीत करते हुए उनसे पुस्तक तथा परमाणु विस्फोट से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे। इस कार्यक्रम का समन्वय न्यास के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के एक शीर्ष निकाय, में दिनांक 22 से 28 सितंबर, 2014 तक 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान 23 सितंबर को 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' तथा 'हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' का आयोजन किया गया।

23 सितंबर को न्यास में आयोजित प्रतियोगिताओं का शुभारंभ हुआ। 'निबंध लेखन प्रतियोगिता' तथा 'हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' में विशिष्ट अतिथि व निर्णायक के रूप में राजभाषा विशेषज्ञ व जाने-माने व्यंग्यकार, श्री सुभाष चंदर उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में न्यास के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के कार्य के प्रति जागरूकता एवं उत्साह को देखते हुए प्रसन्नता व्यक्त की तथा भविष्य में भी अपने

कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी।

26 सितंबर को न्यास-निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर द्वारा विजयी प्रतिभागियों को पहला, दूसरा, तीसरा एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गए।

निबंध लेखन प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार, श्री भाग्येंद्र भाई पटेल; दूसरा पुरस्कार श्रीमती पूनम मधुकर; तीसरा पुरस्कार, श्री संदीप कुमार व सांत्वना पुरस्कार, श्री राजन कुमार व श्रीमती वसुंधरा लाल ने प्राप्त किए। हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी में पहला पुरस्कार, श्री ब्रतीन डे; दूसरा पुरस्कार, श्री नरेन्द्र कुमार; तीसरा पुरस्कार श्रीमती कंचन वांचू शर्मा तथा सांत्वना पुरस्कार श्री अविनाश आनंद व श्रीमती सविता प्रसाद ने प्राप्त किए।

कार्यक्रम का समन्वय व संचालन न्यास की हिंदी संपादक व हिंदी अधिकारी श्रीमती उमा बंसल द्वारा किया गया।

श्रीनगर पुस्तक मेला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 23 से 30 अगस्त, 2014 तक श्रीनगर के कश्मीर हाट में 'श्रीनगर पुस्तक मेला' आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल, माननीय श्री एन.एन. वोहरा ने किया। इस अवसर पर श्री वोहरा ने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय ऐसे पुस्तक मेले न केवल श्रीनगर अपितु अन्य क्षेत्रों, जैसे जम्मू, लेह व कारगिल में भी प्रति वर्ष आयोजित करे।'' उन्होंने यह भी कहा कि यह प्रयास जम्मू-कश्मीर में रहने वालों में पढ़ने की आदत को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें प्रकाशित करने तथा उन्हें उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाने के एनबीटी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को भी निर्देश दिया कि स्कूली बच्चों को पुस्तक मेले में आने के लिए प्रेरित करें।

इस अवसर पर उपस्थित मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव, अशोक ठाकुर ने कहा कि वे एआईसीटीई से अनुरोध करेंगे कि राज्यों में कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ जिससे युवा समूह को प्रकाशन से संबंधित विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके।

इस नौ-दिवसीय पुस्तक मेले में हजार से अधिक प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं ने भाग लिया। मेले के दौरान राष्ट्रीय उर्दू भाषा प्रोन्नयन परिषद व कला, संस्कृति, भाषा

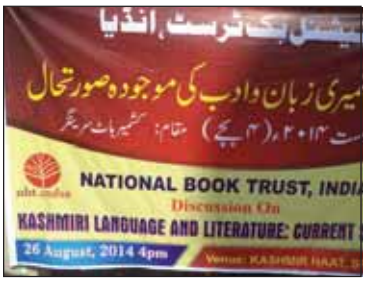

अकादमी, कश्मीर के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। मेले में बच्चों के लिए भी अनेक कार्यक्रम, यथा 'अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिता', 'कवियों से भेंट' तथा 'लेखक से मिलिए' आदि कार्यक्रम आयोजित किये गए।

मेले में एनबीटी द्वारा 26 अगस्त को 'कश्मीरी भाषा तथा साहित्य–वर्तमान परिदृश्य' विषय पर आधारित पैनल-चर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रख्यात कश्मीरी साहित्यकारों ने भाग लिया जिनमें श्री गुलाम नबी आतिश, डॉ. अज़ीज़ हाजिनी, सुश्री रुखशाना जबीन, श्री प्यारे लाल हताश आदि शामिल हैं।

27 अगस्त को 'अनुवाद की महत्ता : कश्मीरी भाषा एवं साहित्य' विषय पर एक अन्य पैनल-चर्चा आयोजित की गई जसमें मोहम्मद यूसुफ तिआंग, प्रो. एम. जमन अजुर्दा, श्री जावेद मतजी तथा कुछ अन्य वक्ता भी उपस्थित थे।

मेले में बच्चों के लिए दो-दिवसीय चित्रकारी कार्यशाला भी आयोजित की गई जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने विख्यात कलाकारों से चित्रकारी के गुर सीखने में अत्यंत रुचि दिखाई।

पुस्तक परिचय

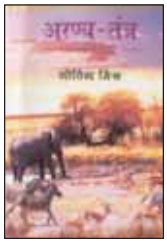

अरण्य-तंत्र (उपन्यास)
गोविन्द मिश्र; पृ. 176 ` 300
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
यथार्थ के चितेरे लेखक स्वयं सरकारी नौकरी में रहे हैं, सो, ब्यूरोक्रेसी को उन्होंने निकट से जाना-समझा है। अरण्य-तंत्र के बहाने उन्होंने जंगली जीव-जंतुओं को पात्र बनाकर तंत्र की खामियों और बदमाशियों को उकेरा है। प्रशासन के इस जंगल में हाथी, हिरन, ऊँट, घोड़ा, खच्चर, बंदर, नीलगाय, शिंपांजी और इस सबसे ऊपर शेर-सीनियर है।

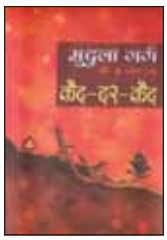

मृदुला गर्ग के 4 नाटक : कैद-दर-कैद; पृ. 176 ` 300
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
लेखिका के चार बहुचर्चित नाटकों का संग्रह। मानवीय संवेदना की गहरी परखकार लेखिका के इन नाटकों में उनका लेखन-कौशल साफ झलकता है। पात्रों के बीच बातचीत एक अलग ही मनोवैज्ञानिक धरातल पर होती है। मृदुला के नाटक सामाजिक विमर्श की माँग करते हैं।

निर्वासन (उपन्यास); *अखिलेश;* पृ. 360 ` 600
राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
आधुनिकता के सांस्कृतिक मूल्यों में अंतर्निहित विडंबनाओं का उद्घाटन हुआ है यहाँ। इस पूरे रचनाक्रम में जातिप्रथा, पितृसत्ता आदि जैसे कई सामंती तत्वों की आलोचना है। उपन्यास लेखन के किसी पारंपरिक ढाँचे से इतर यहाँ यथार्थ और आधुनिकतावाद आदि की अनेक खूबियाँ एक साथ अंतर्गुथित हैं।

औरत को समझने के लिए (काव्य-संग्रह)
श्याम सखा 'श्याम'; पृ. 152 ` 100
सभ्या प्रकाशन, डब्ल्यू एच-44, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110064
एक रात में रची हुईं कविताओं का संग्रह। इस तरह का शायद पहला संग्रह। संग्रह के भाग एक की कविताएँ एक रात में रची हुई हैं, भाग दो की कविताएँ अलग-अलग समयांतराल में रची गई हैं। औरत को समझने के लिए ये कविताएँ पूरी तो नहीं पड़तीं, पर कम भी नहीं हैं।

यूँ ही! (ग़ज़ल-संग्रह)
अशोक 'अंजुम'; पृ. 96 ` 150
संवेदना प्रकाशन, चंद्रविहार कॉलोनी (नगला डालचंद), अलीगढ़-202001
अपनी बात कहने के लिए कोई रचनाकार एक उपन्यास रच डालता है, कोई कथाकार दसियों कहानियाँ लिख डालता है, कवि को भी काफी शब्द खर्चने पड़ते हैं, लेकिन ग़ज़लकार दो पंक्तियों के एक शे'र में ही बड़ी-से-बड़ी बात कह देता है। यहाँ अशोक अंजुम की ग़ज़लों से गुजरते हुए जीवन की अनेकशः अनुभूतियों से बावस्ता होने का आनंद मिल जाता है।

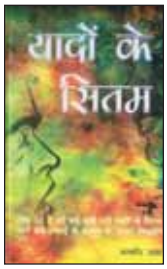

यादों के सितम (ग़ज़ल-नज़्म)
बलबीर 'तन्हा'; पृ. 84 ` 200
ज्योति पब्लिकेशन्ज, 5809-बी, सेक्टर-38 (वेस्ट), चंडीगढ़-160014
इनकी शायरी में एक खास कशिश है, इनके गीत और नज़्में बेजोड़ हैं। ग़ज़ल कहने का इनका अपना अंदाज है—ग़ज़ल चाहे छोटी बहर में कही गई हों या बड़ी बहर में—प्रभाव पूरा छोड़ती है। इनकी ग़ज़लों में दुख है, सुख है, मुहब्बत है, दिल है और दर्द भी। ज़िंदगी का फलसफा हैं इनकी ग़ज़लें।

लावण्यदेवी (उपन्यास); *कुसुम खेमानी;* पृ. 264 ` 450
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
एक विस्तृत फलक का उपन्यास जिसमें एक कुटुंब की पाँच पीढ़ियाँ समाहित हैं। इसके बहाने एक पूरे युग, पूरे काल को बाँधने का प्रयास भी। पृष्ठभूमि उच्चवर्ग की है। लावण्यदेवी का व्यक्तित्व कर्म और संघर्ष के मेल से निर्मित है, सो, उनके सारे फैसले भी जनहित में ही होते हैं।

10 प्रतिनिधि कहानियाँ
सुधा अरोड़ा; पृ. 164 ` 280
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
एक लेखक की अनेक कहानियों में से जब केवल दस का चुनाव करना हो और वह भी स्वयं लेखक से यह चुनाव करने को कहा जाए तो लेखक के लिए यह बड़ी धर्मसंकट की स्थिति बन जाती है। आखिर उसके सभी कहानी उसके ही मानस-पुत्र होते हैं। तो भी, लेखक द्वारा अपनी दस प्रतिनिधि कहानियों का यहाँ चयन किया गया है। पाठक इसे पढ़कर लेखक की सामान्य वैचारिकी से अवगत हो सकते हैं।

पार उतरना धीरे से... (कहानी-संग्रह)
विवेक मिश्र; पृ. 112 ` 200
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दस कहानियों का संग्रह। कोई भी रचनाकार न अपने समय, समाज और देश-काल-वातावरण से निरपेक्ष रह सकता है, न ही अपने आभ्यंतर की कसमसाहट से। जब रचनाकार अपने अंदर और बाहर के दबावों में पिसने लगता है तो उसी के गर्भ से कोई कहानी, कोई कविता जनमती है। विवेक इसी कसमसाहट के कथाकार हैं। उन्हें पढ़ें और जानें—यह कशमकश है क्या!

उत्प्रवासी और अंतिम आह्वान (कविता-संग्रह)
सतीश वर्मा; पृ. 264 ` 300
साहित्यागार, 958, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
जीवन-जगत के हिलोरों, थपेड़ों को जो जीता है, सहता है वही कुछ सिरजता भी है। कवि ने यहाँ आपबीती को जगबीती में इस तरह पिरोया है कि कवि का 'मैं' जग का 'मैं' बन गया है।

कुछ यादें : उनकी डायरी से... (काव्य-संग्रह)
शोभा शर्मा; संक. : अभय चंद शर्मा पृ. 102 ` नहीं लिखा
इस संग्रह में कवयित्री के पूरे स्वभाव को उनकी संपूर्णता में समझने का एक प्रयास झलकता है। कवयित्री के मन और व्यक्तित्व का प्रतिबिंब हैं ये कविताएँ। परदुखकातरता कवयित्री का एक विशिष्ट स्वभाव है जो बरबस दीख पड़ता है उनकी काव्य पंक्तियों में। प्रकृति के सौंदर्य का बखान है तो बच्चों से प्रेम भी झलकता है यहाँ।

गुज़ारिश (ग़ज़ल-संग्रह)
नरेश 'नाज़'; पृ. 112 ` 250
मंजुली प्रकाशन, पी-4, पिलंजी, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110023
अहसास की गहराई में डूबकर लिखी इन ग़ज़लों में सुवास है, मधुमास है। इनकी ग़ज़लों को पढ़कर, सुनकर, गुनकर एक 'गरीब' पाठक भी मालामाल हो जाता है। भाषा की सरहद को तोड़कर ग़ज़ल लिखी है इन्होंने, जो न 'हिंदू' है, न 'मुसलमान'।

एनबीटी में स्वच्छ भारत कार्यक्रम

देश के प्रधानमंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी की देश-भर में 2 अक्तूबर, 2014 से राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान 'स्वच्छ भारत' के आह्वान के दृष्टिगत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (एनबीटी, इंडिया) में भी 2 अक्तूबर को स्वच्छता अभियान में न्यासकर्मियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्वच्छता अभियान से पूर्व, न्यास-निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने सभी न्यासकर्मियों को स्वच्छता के संबंध में शपथ दिलाई। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा, ''गाँधी जी की 145वीं जयंती के शुभ अवसर पर प्रारंभ इस स्वच्छता अभियान में हम सबको बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।'' उन्होंने आगे कहा, ''सफाई एक अच्छी आदत है। किसी भी समय से हम सफाई की आदत अपना सकते हैं।'' उन्होंने आह्वान किया कि खुद साफ रहें, आसपास को साफ रखें, बच्चों को भी यह सिखाएँ। उन्होंने कहा कि ''प्रधानमंत्री के इस अभिनव अभियान का हम सबको समर्थन करना चाहिए, सहयोग देना चाहिए।'' निदेशक महोदय ने हर सप्ताह कम-से-कम एक घंटा कार्यालय में सफाई अभियान हेतु समय अवश्य देने का अनुरोध किया। अपने घर और आसपास की सफाई के लिए भी इसी तरह समय दें। निदेशक ने कहा, ''सफाई से हर किसी को फायदा है।''

निदेशक के उद्‌बोधन के बाद न्यासकर्मी बड़े उत्साह से कार्यालय एवं परिसर तथा आसपास की सफाई में जुट गए।

इससे पूर्व, 26 सितंबर को ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के आह्वान पर न्यास मुख्यालय, वसंत कुंज सहित न्यास के देश-भर के अन्य सभी केंद्रों में भी सफाई अभियान की शुरुआत हो चुकी थी।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

'दिल्ली पुस्तक मेला' में
एनबीटी स्टॉल को प्रथम पुरस्कार

23 से 31 अगस्त, 2014 के दौरान प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (एनबीटी, इंडिया) के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। विदित हो कि भारतीय व्यापार संवर्धन परिषद (ITPO) द्वारा प्रति वर्ष आयोजित किए जाने वाले इस पुस्तक मेले में एनबीटी नियमित रूप से भाग लेता रहा है। एनबीटी को यह पुरस्कार पुस्तकों के सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन एवं स्टॉल की उम्दा साज-सज्जा हेतु प्रदान किया गया। एनबीटी की ओर से यह पुरस्कार, न्यास के उप-निदेशक, श्री इमरानुल हक ने प्राप्त किया।

इस पुस्तक मेले में न्यास के 'किताब क्लब' के लगभग डेढ़ सौ नए सदस्य बने। साथ ही, न्यास के राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा मासिक रूप से प्रकाशित द्विभाषी बाल पत्रिका 'पाठक मंच बुलेटिन' के भी लगभग दो सौ नए सदस्य बने। न्यास से प्रकाशित पुस्तकों की मेले में अच्छी बिक्री हुई।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ` 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/10/2014

उत्तर प्रदेश स्थित रा.पु. न्यास के एजेंट/वितरक : नाम-पते

- **लोकभारती प्रकाशन**
  प्रथम तल
  दरबारी बिल्डिंग
  महात्मा गाँधी मार्ग
  इलाहाबाद-211001

- **फेअर लाइब्रेरी एजुकेशनल वेलफेअर सोसायटी**
  लकड़ीवालान 51/ए-12
  फैजगंज
  मुरादाबाद-244001

- **रमा बुक डिपो**
  बुक मार्केट
  अमीनाबाद
  लखनऊ

- **राका प्रकाशन**
  40-ए, मोतीलाल नेहरू रोड
  इलाहाबाद-211002

- **करेंट बुक डिपो**
  18/53, माल रोड
  फूल बाग के सामने
  कानपुर-208001

- **एजुकेशनल बुक हाउस**
  मुस्लिम यूनिवर्सिटी मार्केट
  अलीगढ़-202002

- **यूनिवर्सिटी बुक सेलर**
  82, हजरतगंज
  पोस्ट बॉक्स-20
  लखनऊ-226001

- **सरस्वती सदन**
  19, सुभाष मार्केट
  बरेली

- **सर्व सेवा संघ प्रकाशन**
  राजघाट
  वाराणसी-221001

- **लोक भारती**
  बुकसेलर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
  15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग
  इलाहाबाद-211001

- **जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल फंड**
  आनंद भवन
  इलाहाबाद

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

भोपाल पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	अक्तूबर-नवंबर, 2014
पुणे पुस्तक मेला, महाराष्ट्र	–	नवंबर, 2014
रायपुर पुस्तक मेला, छत्तीसगढ़	–	1 से 7 नवंबर, 2014
जम्मू पुस्तक मेला, जम्मू-कश्मीर	–	नवंबर, 2014
इंदौर पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	6 से 14 दिसंबर, 2014
कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	–	18 से 26 दिसंबर, 2014
जोधपुर पुस्तक मेला, राजस्थान	–	दिसंबर, 2014
देहरादून पुस्तक मेला, उत्तराखंड	–	दिसंबर, 2014

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :

सहायक-निदेशक (प्रदर्शनी)
दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070